मेरे जीवन की महत्वपूर्ण घटना

प्रवीण सूरी

यह निबंध मूल रूप से 1969 में नई दिल्ली Children's International Fair Magazine में प्रकाशित हुआ था।

प्रवीण सूरी ने अपने निबंध के लिए पुरस्कार जीता और पुरस्कार भारत के तत्कालीन उपराष्ट्रपति श्री गोपाल स्वरूप पाठक द्वारा प्रदान किया गया।

मेरे जीवन की महत्वपूर्ण घटना

प्रवीण सूरी

पिछले वर्ष जो मेरे साथ घटना घटी वह मेरे जीवन की महत्वपूर्ण घटना बनकर रह गयी। जब भी मैं उस घटना का स्मरण करता हूँ तो मुझे वह एक हथौड़े जैसी चोट के समान प्रतीत होती और इस प्रकार से वह घटना मेरे लिए महत्व पूर्ण बनकर रह गयी। मैं उस घटना को जितना भुलाने को चेष्टा करता हूँ उतनी ही वह मेरे हृदय में घर करती जा रही है।

घटना उन दिनों की है, जब मैं सप्तम कक्षा में पढ़ता था। कक्षा में अक्सर मैं प्रथम आता था। मेरे सभी गुरु मुझसे प्रभावित थे और मुझे आगे बढ़ने का प्रोत्साहन देते थे। इतनी प्रेरणा के मिलने से मैंने अपने अन्य सहपाठियों को मात भी दे दी। सब विद्यार्थी मेरा सम्मान भी करते थे, पर ना जाने क्यों अरविंद मुझसे खिचा खिचा रहता था। उससे दोस्ती क़ायम रखना के लिए मैंने भरसक प्रयत्न किया मगर हमेशा असफलता ही मेरे हाथ लगी। तब से मुझे यह महसूस होने लगा की वह प्रत्येक समय में मेरा प्रतिद्वंदी है। अक्सर मुझे बस्ते में से मेरी कई कापियाँ ग़ायब हो जाती थी। मुझे विश्वास था की यह अरविंद कि शरारत है पर मैंने कभी किसीसे शिकायत नहीं की।

पढ़ाई में अरविंद भी बहुत तेज था परंतु कक्षा में द्वितीय आता था। मुझे लगा शायद इसी कारण वह मेरा प्रतिद्वंदी है और मेरा यह अनुमान सही भी नक़ला। मैंने अक्सर सोचा था कि परीक्षाएँ हो तो मैं अपने सहपाठी अरविंद को मुझसे आगे निकालने दु पर मुझे दूसरे ही क्षण यह विचार आता की लोगो के ऊपर मेरा प्रभाव नहीं रह जाएगा और अरविंद को लोग तथा मेरे सहपाठी और हमारे गुरुजी ज़्यादा महत्व देंगे और उसे मुझसे ज़्यादा उचित समझेंगे, तथा मैं अपने आप को छोटा अनुभव करूँगा। इसी कारण मैंने यह दुस्साहस्पूर्ण कार्य नहीं किया और सोचा की किसी भी तरह अरविंद से दोस्ती निभाऊँगा पर उस समय मेरा दुर्भाग्य प्रबल था।

जब वार्षिक परीक्षाएँ प्रारंभ हुई तो अरविंद मेरे पास बैठा। परंतु अभी दो दिन ही हुए थे कि गुरुजी ने अरविंद को मेरे पास से उठवा कर अंतिम पंक्ति की एक कुर्सी पर राजीव के साथ बिठा दिया और मेरे साथ कमल को बिठा दिया। परीक्षाएँ चलती रही परंतु जिस दिन अंतिम प्रश्नपत्र था उस दिन जो बात होने वाली थी उसका मैं स्वप्न में भी अनुभव नहीं कर सकता। रोज़ की तरह हम सब अपने अंतिम प्रश्नपत्र देने बैठे। मैं प्रश्नपत्र पढ़ना में बहुत मग्न था और मेरा मित्र कमल भी पूरे ध्यान से प्रश्नों का हाल कर रहा था। परंतु न जाने क्यों अरविंद का ख़याल मुझे बार बार आ रहा था। मैं अभी यह कुछ सोच ही रहा था कि एक चोटिसी काग़ज़ की गोली मेरे मेज़ पर आ कर गिरी। पहले तो मैंने उसपर कोई ध्यान नहीं दिया परंतु उसे खोले बिना मुझसे रहा नहीं गया। मैं क्या जानता था कि उस काग़ज़ की गोली का खोलना मक्खियाँ निगलने के समान होगा। उसे खोलकर जब पढ़ा तो मैंने दांतों तले उँगलियाँ दबा ली। यह काग़ज़ अरविंद ने फ़ैका था और उस काग़ज़ को पढ़कर मुझे पहली बार यह ज्ञान हुआ की अरविंद भी नक़ल मारता है। उसने मुझे लिखा था कि प्रश्न न० ५ का हल लिखकर वापस भेजो। मैं एकाएक निर्णय ना कर सका और सोचने लगा की क्या करूँ। तभी मुझे अरविंद और मेरे बीच में वैर था उसका ध्यान आया क्योकि शायद मैंने सोचा की अगर मैं उस प्रश्न का हल लिखकर भेजू तो हमारा आपसी सम्बन्ध अच्छे हो जाएँगे। मुझे अरविंद पर तरस भी आया। अपनी परवाह किए बिना और एक ही विचार दिमाग़ में रख कर मैंने ५ वे प्रश्न का हल एक काग़ज़ पर लिखा और उसकी एक गोली बनाकर उसकी टेबल पर फ़ेका। भाग्य ने मेरा साथ नहीं दिया और गुरुजी ने मुझे पकड़ लिया। सब विद्यार्थी मेरी ओर देखने लगे और मेरी आँखें लज्जा से पृथ्वी पर गड़ गई। इस परिस्तिथि को मैं समझ भी नहीं सका। जब मैंने अरविंद की ओर दृष्टि दौड़ाई तो वह मेरी और मुस्कुराते हुए खड़ा दिखा।

मैं प्रतिशोध की ज्वाला से जल गया। परंतु उस समय उसका पलड़ा भारी था और मैं कुछ करने में असफल था। उसकी कुटिल मुस्कान देखकर मैं खून का घुट पी गया परंतु वह प्रतिशोध की चिंगारी चिंगारी न रह कर शोला बन गयी। इस बीच मुझे परीक्षा से बहिष्कृत कर दिया गया। कुछ दिन बाद परीक्षा फल निकला तो अरविंद प्रथम आया था और मैं द्वितीय। यह बात मैंने अपने माता-पिता को भी बता दी परंतु उन्होंने मुझसे कुछ न कहा। दिन बीतते गयें और मैंने समझा कि घटना का अंत यही हुआ परंतु मैं इस माने में सही न था।

कुछ दिन बाद जब मैं और मेरे कई मित्र पाठशाला से घर आ रहे थे तब उन्मे अरविंद भी शामिल हो गया। उसे देख कर मुझ में कई विचार आने लगे। मुझे प्रतीत होने लगा कि वह एक सरल बालक न रह कर अब एक चालाक लड़का बन गया। अब ऐसा मालूम होता था कि उसके पेट में दाढ़ी है। हमारे घर तक पहुँचने का रास्ता एक जंगल के बीच से पड़ता था। हम चले जा रहे थे कि अचानक अरविंद चिल्लाया 'बचाओ - बचाओ'। मैंने देखा कि अरविंद की तरफ़ धीरे-धीरे एक साँप बढ़ रहा है। प्रतिशोद की ज्वाला भड़की और सोचा की उसकी सहायता न करूँ। परंतु फिर मुझे अरविंद पर दया आई और उसे बचाने के मुझमें भावना जग पड़ी। मेरा हृदय कहने लगा की इसी को इंसानियत कहते है। मेरे दिमाग़ में एक तरह का द्वन्द होने लगा किंतु विजय मेरे दिल की हुई। मैंने आव देखा ना ताव और पास पड़ी लकड़ी से साँप पर भरपूर वार कर दिया। पास खड़े लड़के चिल्ला उठे। अरविंद ने पीछे मुड़कर देखा तो उसे सारी बात समझ में आ गयी। उसने आगे बढ़कर मुझसे माफ़ी माँगी और कलई खोल दी। जब दूसरे लड़कों को यह बात मालूम हुई तो वे अफ़सोस प्रकट करने लगे। गुरुजी को भी यह बात मालूम हो गई। अरविंद ने प्रथम आने का रहस्य सबको बता दिया।

अरविंद मुझसे गले मिला और तब से वह मेरा प्रिय मित्र बन गया। अरविंद नाक के बाल समान मेरा मित्र बन गया। यही घटना आज मेरे जीवन की सबसे महत्वपूर्ण घटना बनकर रहा गयी।

आज तक यह घटना मैं न कभी भूल सका हूँ और न ही भूल पाऊँगा।

कॉपीराइट 1969 प्रवीण सूरी। सभी अधिकार सुरक्षित।

ऑडियो कॉपीराइट 2024 राघव सूरी। सभी अधिकार सुरक्षित।

आप SuriAudio.com पर और अधिक ऑडियो प्रोडक्शन सुन सकते हैं

पीयूष अगरवाल की आवाज़ में | आप पीयूष अग्रवाल का अधिक ऑडियो PiyushAgarwal.com पर सुन सकते हैं।

सुनने के लिए धन्यवाद!

प्रथम पुरस्कार

मेरे जीवन की महत्त्वपूर्ण घटना

प्रवीण सूरी

पिछले वर्ष जो मेरे साथ घटना घटी वह मेरे जीवन की महत्वपूर्ण घटना बनकर रह गयी। जब भी मैं उस घटना का स्मरण करता हूँ तो मुझे वह एक हथौड़े जैसी चोट के समान प्रतीत होती और इस प्रकार से वह घटना मेरे लिए महत्वपूर्ण बन कर रह गयी। मैं उस घटना को जितना भुलाने को चेष्टा करता हूँ उतनी ही वह मेरे हृदय में घर करती जा रही है।

घटना उन दिनों की है, जब मैं सप्तम कक्षा में पढ़ता था। कक्षा में अक्सर मैं प्रथम आता था। मेरे सभी गुरु मुझसे प्रभावित थे और मुझे आगे बढ़ने का प्रोत्साहन देते थे। इतनी प्रेरणा के मिलने से मैंने अपने अन्य सहपाठियों को मात भी दे दी। सब विद्यार्थी मेरा सम्मान करते थे, पर न जाने क्यों अरविन्द मुझ से खिचा-खिचा रहता था। उससे दोस्ती कायम रखने के लिए मैंने भरसक प्रयत्न किया मगर हमेशा असफलता ही मेरे हाथ लगी। तब से मेरे यह महसूस होने लगा कि वह प्रत्येक समय में मेरा प्रतिद्वन्दी है। अक्सर मुझे बस्ते में से मेरी कई कापियाँ गायब हो जाती थीं। मुझे विश्वास था कि यह अरविन्द की शरारत है पर मैंने कभी किसी से शिकायत नहीं की,

पढ़ाई में अरविन्द भी बहुत तेज़ था परन्तु कक्षा में द्वितीय आता था। मुझे लगा शायद इसी कारण वह मेरा प्रतिद्विन्द्वी है और मेरा यह अनुमान सही भी निकला। मैं अक्सर सोचा करता था कि परीक्षायें हों तो मैं अपने सहपाठी अरविन्द को मुझसे आगे निकलने दूँ पर मुझे दूसरे ही क्षण यह विचार आता कि लोगों के ऊपर मेरा प्रभाव नहीं रह जायगा और अरविन्द को लोग तथा मेरे सहपाठी और हमारे गुरुजी ज्यादा महत्व देंगे और उसे मुझसे ज्यादा उचित समझेंगे, तथा मैं अपने आप को छोटा अनुभव करूँगा। इसी कारण मैंने यह दुस्साहसपूर्ण कार्य नहीं किया और सोचा कि किसी भी तरह अरविन्द से दोस्ती निभाऊँगा पर उस समय मेरा दुर्भाग्य प्रबल था।

जब वार्षिक परीक्षायें आरम्भ हुई तो अरविन्द मेरे पास बैठा। परन्तु अभी दो

दिन ही हुए थे कि गुरुजी ने अरविन्द को मेरे पास से उठवा कर अंतिम पंक्ति की एक कुर्सी पर राजीव के साथ बिठा दिया और मेरे साथ कमल को बिठा दिया। परीक्षायें चलती रही परन्तु जिस दिन अंतिम प्रश्नपत्र था उस दिन जो बात होने वाली थी उसका मैं स्वप्न में भी अनुभव नहीं कर सकता। रोज की तरह हम सब अपने अंतिम प्रश्नपत्र देने बैठे। मैं प्रश्नपत्र पढ़ने में बहुत मग्न था और मेरा मित्र कमल भी पूरे ध्यान से प्रश्नों का हल कर रहा था। परन्तु न जाने क्यों अरविन्द का ख्याल मुझे बार-बार आ रहा था। मैं अभी यह कुछ सोच ही रहा था कि एक छोटी सी कागज की गोली मेरी मेज़ पर आ कर गिरी। पहले तो मैंने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया परन्तु उसे खोले बिना मुझ से न रहा गया। मैं क्या जानता था कि उस कागज की गोली का खोलना मक्खियाँ निगलने के समान हो। उसे खोलकर जब पढ़ा तो मैंने दाँतों तले उँगली दबा ली। यह कागज़ अरविन्द ने फैंका था और उस कागज़ को पढ़कर मुझे पहली बार यह ज्ञान हुआ की अरविन्द भी नकल मारता है। उसने मुझे लिखा था कि प्रश्न न० ५ का हल लिखकर वापस भेजो। मैं एकाएक निर्णय न कर सका और सोचने लगा कि क्या करूँ। तभी मुझे अरविन्द और मेरे बीच में जो वैर था उसका ध्यान आया क्योंकि शायद मैंने सोचा की अगर मैं उसे प्रश्न का हल लिख कर भेजूँ तो हमारे आपसी सम्बन्ध अच्छे हो जायेंगे। मुझे अरविन्द पर तरस भी आया। अपनी परवाह किये बिना और एक ही विचार दिमाग में रखकर मैंने ५ वे प्रश्न का हल एक कागज़ पर लिखा और उसकी एक गोली बनाकर उसकी टेबुल पर फेंका। भाग्य ने मेरा साथ नहीं दिया और गुरुजी ने मुझे पकड़ लिया। सब विद्यार्थी मेरी ओर देखने लगे और मेरी आँखे लज्जा से पृथ्वी पर गड़ गयीं। इस परिस्थिति को मैं समझ भी नहीं सका। जब मैंने अरविन्द की ओर दृष्टि दौड़ाई तो वह मेरी ओर मुस्कराते हुए खड़ा दिखा।

मैं प्रतिशोध की ज्वाला से जल गया। परन्तु उस समय उसका पलड़ा भारी था और मैं कुछ करने से असफल था। उसकी कुटिल मुस्कान देख कर मैं खून का घूंट पी गया परन्तु वह प्रतिशोध की चिन्गारी चिन्गारी न रह कर शोला बन गयी। इस बीच मुझे परीक्षा से बहिष्कृत कर दिया गया। कुछ दिन बाद परीक्षा फल निकला तो अरविन्द प्रथम आया था और मैं द्वितीय। यह बात मैंने अपने माता-पिता को भी बता दी परन्तु उन्होंने मुझसे कुछ न कहा। दिन बीतते गये और मैंने समझा कि घटना का अन्त यहीं हुआ परन्तु मैं इस माने में सही न था।

कुछ दिन बाद जब मैं और मेरे कई मित्र पाठशाला से घर आ रहे थे तब उनमें अरविन्द भी शामिल हो गया। उसे देख कर मुझ में कई विचार आने लगे। मुझे प्रतीत होने लगा कि वह एक सरल बालक न रह कर अब एक चालाक लड़का

बन गया। अब ऐसा मालूम होता था कि उसके पेट में दाढ़ी है। हमारे घर तक पहुँचने का रास्ता एक जंगल के बीच से पड़ता था। हम चले जा रहे थे कि अचानक अरविन्द चिल्लाया "बचाओ-बचाओ"। मैंने देखा कि अरविन्द की तरफ धीरे-धीरे एक साँप बढ़ रहा है। प्रतिशोध की ज्वाला भड़की और सोचा कि उसकी सहायता न करूँ। परन्तु फिर मुझे अरविन्द पर दया आयी और उसे बचाने की मुझमें भावना जग पड़ी। मेरा हृदय कहने लगा कि इसी को इन्सानियत कहते हैं। मेरे दिमाग में एक तरह का द्वन्द होने लगा किन्तु विजय मेरे दिल की हुई। मैंने, आव देखा न ताव और पास पड़ी लकड़ी से साँप पर भरपूर वार कर दिया। पास खड़े लड़के चिल्ला उठे। अरविन्द ने पीछे मुड़कर देखा तो उसे सारी बात समझ में आ गयी। उसने आगे बढ़कर मुझसे माफी मांगी और कलई खोल दी। जब दूसरे लड़कों को यह बात मालूम हुई तो वे अफसोस प्रकट करने लगे। गुरुजी को भी यह बात मालूम हो गई। अरविन्द ने प्रथम आने का रहस्य सबको बता दिया।

अरविन्द मुझसे गले मिला और तब से वह मेरा प्रिय मित्र बन गया। अरविन्द नाक के बाल के समान मेरा मित्र बन गया। यही घटना आज मेरे जीवन की सबसे महत्वपूर्ण घटना बनकर रह गयी।

आज तक यह घटना मैं न कभी भुला सका हूँ और न ही भुला पाऊँगा।

बच्चे सदा धीरज रखें, विश्वास रखें और वे निराशा को कभी मन में स्थान न दें।